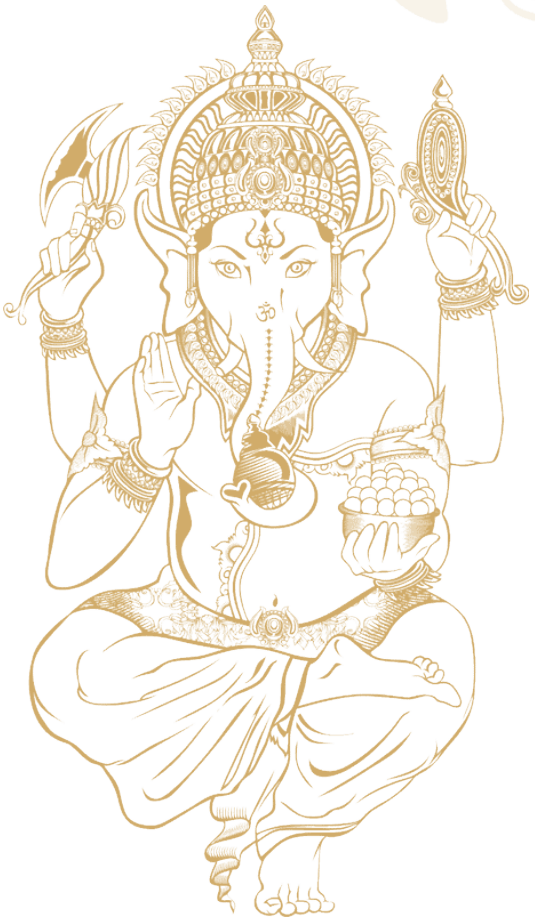

# Prerna Samsher Warpudkar

13 Mar 1988

08:45 PM

Parbhani

Model: Web-KundliPhal

Order No: 119754001

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | स्त्रीलिंग |
| **जन्म तिथि** | **13/03/1988** |
| दिवस | रविवार |
| **जन्म समय** | **20:45:00 कला** |
| इष्ट | 35:30:19 घटी |
| **स्थान** | **Parbhani** |
| राज्य | Jammu and Kashmir |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 19:16:00 उत्तर |
| रेखांश | 76:51:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:22:36 कला |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 कला |
| स्थानिक वेल | 20:22:24 कला |
| वेलान्तर | -00:09:29 कला |
| साम्पातिक वेल | 07:48:16 कला |
| सूर्योदय | 06:32:52 कला |
| सूर्यास्त | 18:31:32 कला |
| दिनमान | 11:58:41 कला |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | वसन्त |
| सूर्याचे अंश | 29:34:14 कुम्भ |
| लग्नाचे अंश | 01:45:41 तुला |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न–लग्नाधिपति | तुला – शुक्र |
| **राशि–स्वामी** | **धनु – गुरु** |
| **नक्षत्र–चरण** | **उत्तराषाढ़ा – 1** |
| नक्षत्र स्वामी | रवि |
| योग | वरियान |
| करण | विष्टि |
| गण | मनुष्य |
| योनि | मुंगुस |
| नाड़ी | अन्त्य |
| वर्ण | क्षत्रिय |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | उंदीर |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | अग्नि |
| जन्म नामाक्षर | भे–भैरवी |
| पाया(राशि–नक्षत्र) | ताम्र – ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | मीन |

# पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | माह | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1909 | फाल्गुन | 23 |
| पंजाबी | संवत : 2044 | फाल्गुन | 30 |
| बंगाली | सन् : 1394 | फाल्गुन | 29 |
| तमिल | संवत : 2044 | मासी | 30 |
| केरल | कोल्लम : 1163 | कुभम | 30 |
| नेपाली | संवत : 2044 | फाल्गुन | 30 |
| चैत्रादी | संवत : 2044 | चैत्र | कृष्ण 10 |
| कार्तिकादी | संवत : 2044 | फाल्गुन | कृष्ण 10 |

## पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति वेल _____: 23:41:16
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 18:38:44 कला
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय समयी योग _____: वरियान
योग समाप्ति वेल _____: 24:38:37 कला
जन्म योग _____: वरियान
सूर्योदय समयी करण _____: वणिज
करण समाप्ति वेल _____: 12:54:46 कला
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 05:15:41
भभोग _____: 55:06:53
भोग्य दशा वेल _____: सूर्य 5 वर्ष 5 मा 5 दि

## घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

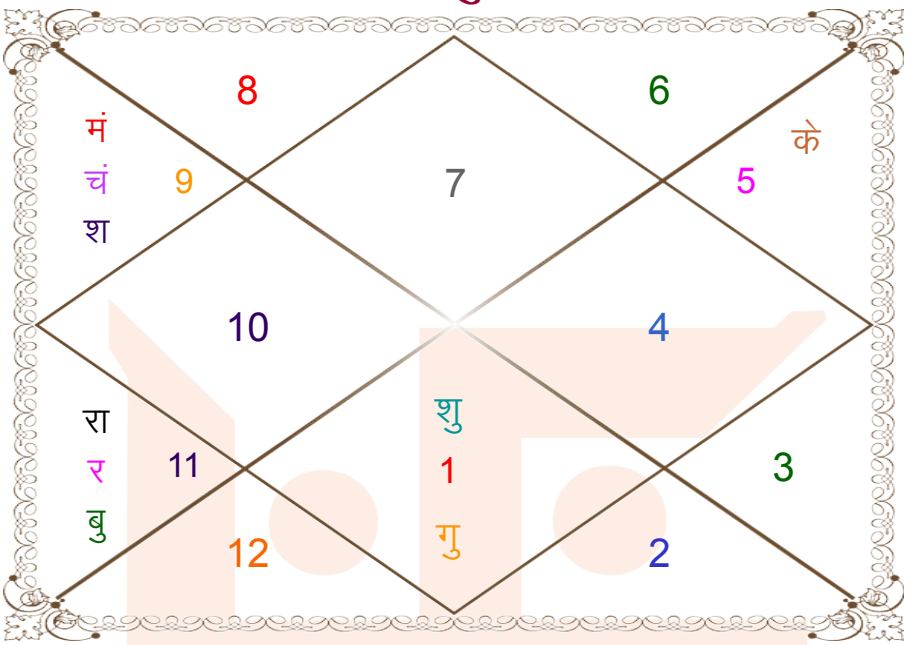


## चन्द्र कुंडली

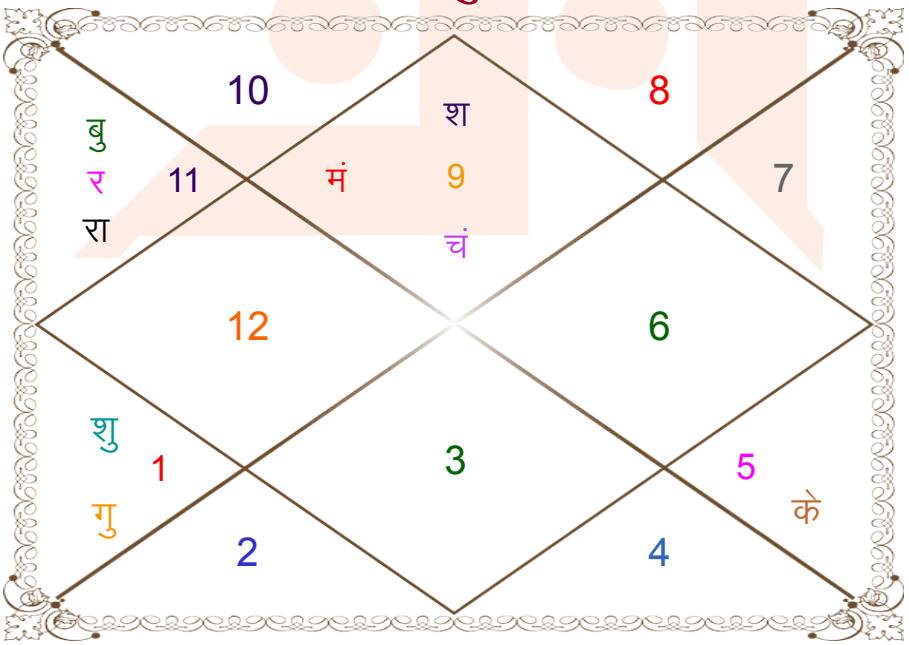

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

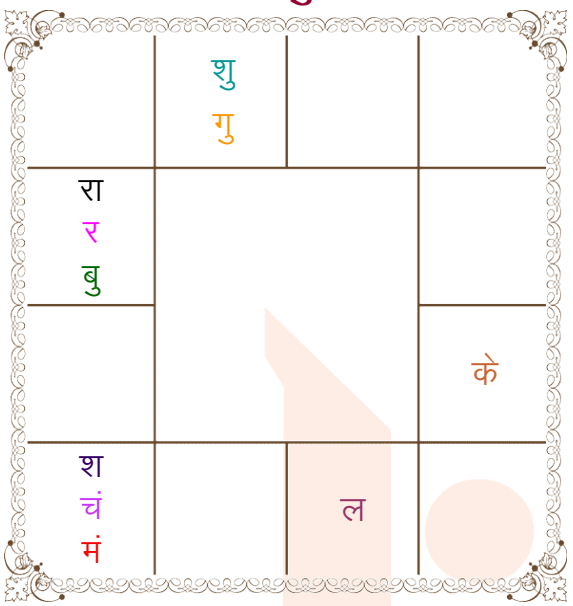


## लग्न कुंडली

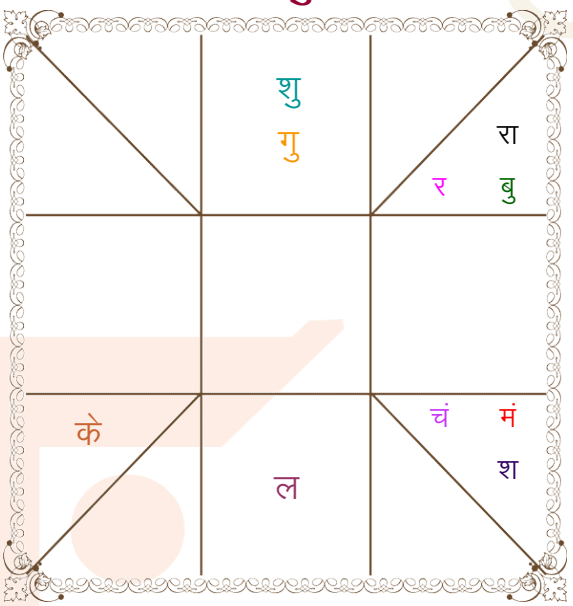


## विंशोत्तरी
## रवि 5वर्ष 5मा 5दि

**रवि**

**13/03/1988**

**20/08/2107**

| | |
|---|---|
| रवि | 19/08/1993 |
| चन्द्र | 19/08/2003 |
| मंगळ | 19/08/2010 |
| राहु | 18/08/2028 |
| गुरु | 18/08/2044 |
| शनि | 19/08/2063 |
| बुध | 18/08/2080 |
| केतु | 19/08/2087 |
| शुक्र | 20/08/2107 |

## योगिनी
## संकटा 7वर्ष 2मा 27दि

**संकटा**

**11/06/2023**

**11/06/2031**

| | |
|---|---|
| संकटा | 21/03/2025 |
| मंगळा | 10/06/2025 |
| पिंगला | 20/11/2025 |
| धान्या | 21/07/2026 |
| भ्रामरी | 11/06/2027 |
| भद्रिका | 21/07/2028 |
| उल्का | 20/11/2029 |
| सिद्धा | 11/06/2031 |

# ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | तुला | 01:45:41 | 335:13:25 | चित्रा | 3 | 14 | शुक्र | मंगळ | बुध | ——— |
| सूर्य | | | कुंभ | 29:34:14 | 00:59:50 | पू.भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | चंद्र | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | धनु | 27:55:40 | 14:23:47 | उत्तराषाढ़ा | 1 | 21 | गुरु | सूर्य | चंद्र | सम राशि |
| मंगळ | | | धनु | 19:56:23 | 00:40:32 | पूर्वाषाढ़ा | 2 | 20 | गुरु | शुक्र | राहु | मित्र राशि |
| बुध | | | कुंभ | 02:49:02 | 01:12:29 | धनिष्ठा | 3 | 23 | शनि | मंगळ | शुक्र | सम राशि |
| गुरु | | | मेष | 07:21:31 | 00:12:50 | अश्विनी | 3 | 1 | मंगळ | केतु | राहु | मित्र राशि |
| शुक्र | | | मेष | 14:18:12 | 01:05:47 | भरणी | 1 | 2 | मंगळ | शुक्र | शुक्र | सम राशि |
| शनि | | | धनु | 08:11:56 | 00:02:46 | मूल | 3 | 19 | गुरु | केतु | गुरु | सम राशि |
| राहु | व | | कुंभ | 29:24:07 | 00:00:12 | पू.भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | सूर्य | मित्र राशि |
| केतु | व | | सिंह | 29:24:07 | 00:00:12 | उ.फाल्गुनी | 1 | 12 | सूर्य | सूर्य | राहु | शत्रु राशि |
| हर्ष | | | धनु | 07:08:29 | 00:01:09 | मूल | 3 | 19 | गुरु | केतु | राहु | ——— |
| नेप | | | धनु | 16:16:15 | 00:00:57 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | चंद्र | ——— |
| प्लूटो | व | | तुला | 18:39:55 | 00:00:56 | स्वाति | 4 | 15 | शुक्र | राहु | चंद्र | ——— |
| दशम भाव | | | कर्क | 01:25:37 | -- | पुनर्वसु | -- | 7 | चंद्र | गुरु | राहु | -- |

व – वक्री  स – स्थिर
अ – अस्त  पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
**लाहिरी अयनांश : 23:41:34**

## लग्न–चलित

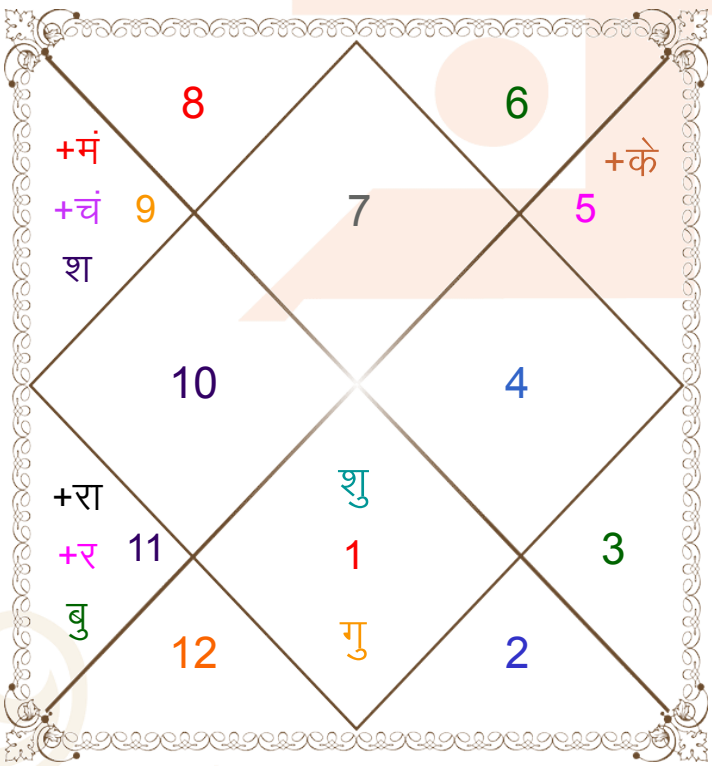


## चन्द्र कुंडली

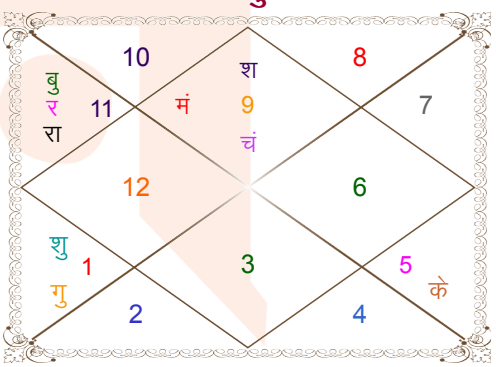


## नवमांश कुंडली

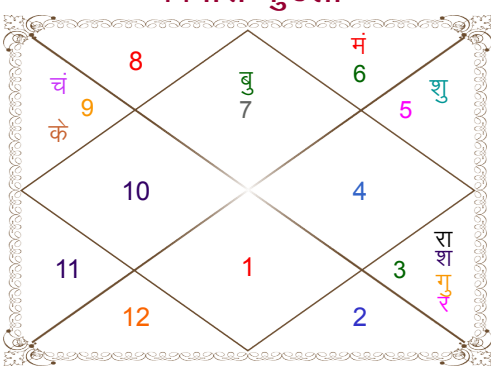

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कन्या | 16:42:21 | तुला | 01:45:41 |
| 2 | तुला | 16:42:21 | वृश्चिक | 01:39:00 |
| 3 | वृश्चिक | 16:35:39 | धनु | 01:32:19 |
| 4 | धनु | 16:28:58 | मकर | 01:25:37 |
| 5 | मकर | 16:28:58 | कुम्भ | 01:32:19 |
| 6 | कुम्भ | 16:35:39 | मीन | 01:39:00 |
| 7 | मीन | 16:42:21 | मेष | 01:45:41 |
| 8 | मेष | 16:42:21 | वृषभ | 01:39:00 |
| 9 | वृषभ | 16:35:39 | मिथुन | 01:32:19 |
| 10 | मिथुन | 16:28:58 | कर्क | 01:25:37 |
| 11 | कर्क | 16:28:58 | सिंह | 01:32:19 |
| 12 | सिंह | 16:35:39 | कन्या | 01:39:00 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | तुला | 01:45:41 |
| 2 | वृश्चिक | 01:07:46 |
| 3 | धनु | 00:57:46 |
| 4 | मकर | 01:25:37 |
| 5 | कुम्भ | 02:38:58 |
| 6 | मीन | 03:24:21 |
| 7 | मेष | 01:45:41 |
| 8 | वृषभ | 01:07:46 |
| 9 | मिथुन | 00:57:46 |
| 10 | कर्क | 01:25:37 |
| 11 | सिंह | 02:38:58 |
| 12 | कन्या | 03:24:21 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भाद्रपद | उ.भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी |
| कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू.फाल्गुनी |
| उ.फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा |

## चलित कुंडली

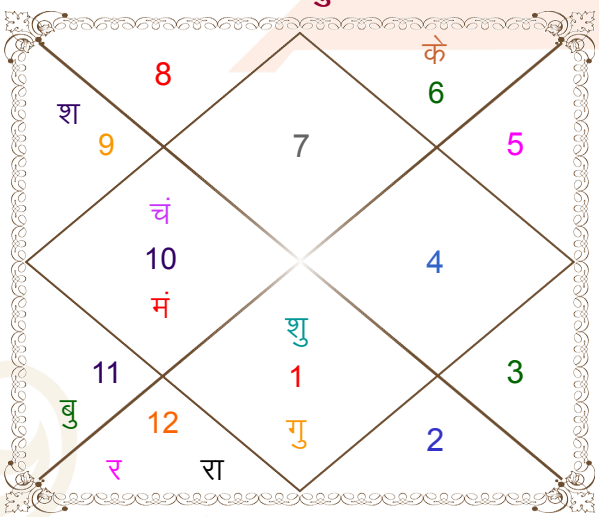


## भाव कुंडली

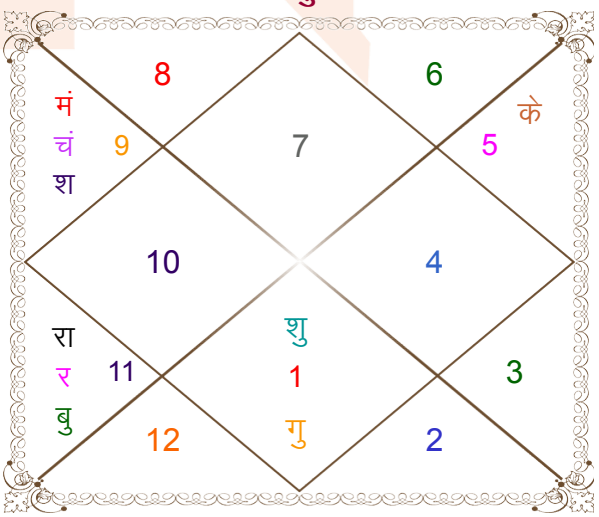

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ——— कारक ——— | | ——— अवस्था ——— | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | आत्मा | पितृ | मृत | खल | निद्रा | 7.75 | 36 % |
| चंद्र | अमात्य | मातृ | मृत | शक्त | भोजन | 1.37 | 48 % |
| मंगळ | भ्रातृ | भ्रातृ | वृद्ध | मुदित | नेत्रपाणि | 3.94 | 51 % |
| बुध | कलत्र | ज्ञाति | बाल | शक्त | कौतुक | 1.41 | 66 % |
| गुरु | ज्ञाति | धन | कुमार | मुदित | आगमन | 3.59 | 46 % |
| शुक्र | मातृ | कलत्र | युवा | शान्त | नेत्रपाणि | 3.62 | 18 % |
| शनि | पुत्र | आयुष्य | कुमार | शक्त | आगमन | 1.83 | 55 % |
| राहु | ——— | ज्ञान | मृत | मुदित | नेत्रपाणि | 0.00 | 14 % |
| केतु | ——— | मोक्ष | मृत | खल | नेत्रपाणि | 0.00 | 14 % |
| **एकुण** | | | | | | **23.51** | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भाद्रपद | उ.भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी |
| कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू.फाल्गुनी |
| उ.फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा |

## चलित कुंडली

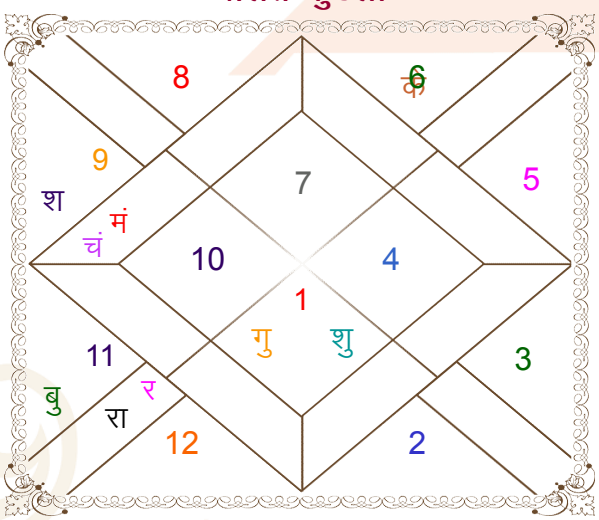


## लग्न–चलित

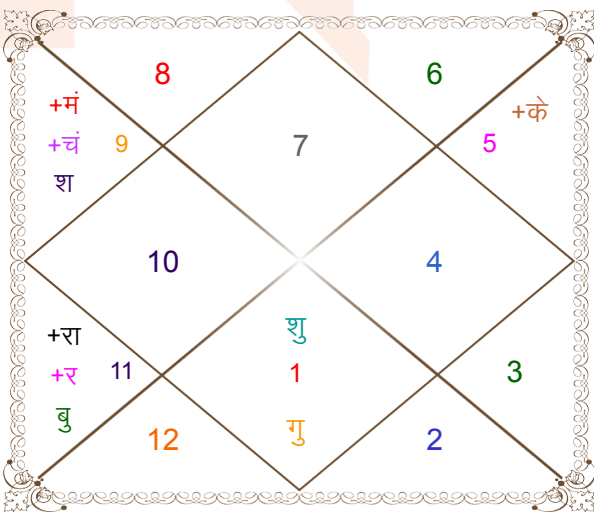

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा वेल : रवि 5 वर्ष 5 महिना 5 दिवस

| सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगळ 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13/03/1988 | | 19/08/1993 | | 19/08/2003 | | 19/08/2010 | | 18/08/2028 | |
| 19/08/1993 | | 19/08/2003 | | 19/08/2010 | | 18/08/2028 | | 18/08/2044 | |
| | 13/03/1988 | चंद्र | 19/06/1994 | मंगळ | 15/01/2004 | राहु | 01/05/2013 | गुरु | 07/10/2030 |
| चंद्र | 06/06/1988 | मंगळ | 18/01/1995 | राहु | 02/02/2005 | गुरु | 25/09/2015 | शनि | 19/04/2033 |
| मंगळ | 12/10/1988 | राहु | 19/07/1996 | गुरु | 09/01/2006 | शनि | 01/08/2018 | बुध | 26/07/2035 |
| राहु | 06/09/1989 | गुरु | 18/11/1997 | शनि | 17/02/2007 | बुध | 17/02/2021 | केतु | 01/07/2036 |
| गुरु | 25/06/1990 | शनि | 19/06/1999 | बुध | 15/02/2008 | केतु | 07/03/2022 | शुक्र | 02/03/2039 |
| शनि | 07/06/1991 | बुध | 18/11/2000 | केतु | 13/07/2008 | शुक्र | 07/03/2025 | सूर्य | 19/12/2039 |
| बुध | 12/04/1992 | केतु | 19/06/2001 | शुक्र | 12/09/2009 | सूर्य | 30/01/2026 | चंद्र | 19/04/2041 |
| केतु | 18/08/1992 | शुक्र | 17/02/2003 | सूर्य | 18/01/2010 | चंद्र | 01/08/2027 | मंगळ | 26/03/2042 |
| शुक्र | 19/08/1993 | सूर्य | 19/08/2003 | चंद्र | 19/08/2010 | मंगळ | 18/08/2028 | राहु | 18/08/2044 |

| शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18/08/2044 | | 19/08/2063 | | 18/08/2080 | | 19/08/2087 | | 20/08/2107 | |
| 19/08/2063 | | 18/08/2080 | | 19/08/2087 | | 20/08/2107 | | 00/00/0000 | |
| शनि | 22/08/2047 | बुध | 15/01/2066 | केतु | 14/01/2081 | शुक्र | 19/12/2090 | सूर्य | 08/12/2107 |
| बुध | 01/05/2050 | केतु | 12/01/2067 | शुक्र | 17/03/2082 | सूर्य | 19/12/2091 | चंद्र | 14/03/2108 |
| केतु | 10/06/2051 | शुक्र | 12/11/2069 | सूर्य | 22/07/2082 | चंद्र | 19/08/2093 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 10/08/2054 | सूर्य | 18/09/2070 | चंद्र | 20/02/2083 | मंगळ | 19/10/2094 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 23/07/2055 | चंद्र | 18/02/2072 | मंगळ | 20/07/2083 | राहु | 18/10/2097 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 20/02/2057 | मंगळ | 14/02/2073 | राहु | 06/08/2084 | गुरु | 19/06/2100 | | 00/00/0000 |
| मंगळ | 01/04/2058 | राहु | 03/09/2075 | गुरु | 13/07/2085 | शनि | 20/08/2103 | | 00/00/0000 |
| राहु | 05/02/2061 | गुरु | 09/12/2077 | शनि | 22/08/2086 | बुध | 20/06/2106 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 19/08/2063 | शनि | 18/08/2080 | बुध | 19/08/2087 | केतु | 20/08/2107 | | 00/00/0000 |

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 5 मा 4 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| राहु - सूर्य | | राहु - चंद्र | | राहु - मंगळ | | गुरु - गुरु | | गुरु - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 07/03/2025 | | 30/01/2026 | | 01/08/2027 | | 18/08/2028 | | 07/10/2030 | |
| 30/01/2026 | | 01/08/2027 | | 18/08/2028 | | 07/10/2030 | | 19/04/2033 | |
| सूर्य | 24/03/2025 | चंद्र | 17/03/2026 | मंगळ | 23/08/2027 | गुरु | 30/11/2028 | शनि | 02/03/2031 |
| चंद्र | 20/04/2025 | मंगळ | 18/04/2026 | राहु | 20/10/2027 | शनि | 03/04/2029 | बुध | 11/07/2031 |
| मंगळ | 09/05/2025 | राहु | 09/07/2026 | गुरु | 10/12/2027 | बुध | 22/07/2029 | केतु | 03/09/2031 |
| राहु | 28/06/2025 | गुरु | 20/09/2026 | शनि | 09/02/2028 | केतु | 05/09/2029 | शुक्र | 04/02/2032 |
| गुरु | 10/08/2025 | शनि | 16/12/2026 | बुध | 03/04/2028 | शुक्र | 13/01/2030 | सूर्य | 22/03/2032 |
| शनि | 01/10/2025 | बुध | 03/03/2027 | केतु | 25/04/2028 | सूर्य | 21/02/2030 | चंद्र | 07/06/2032 |
| बुध | 17/11/2025 | केतु | 04/04/2027 | शुक्र | 28/06/2028 | चंद्र | 27/04/2030 | मंगळ | 31/07/2032 |
| केतु | 06/12/2025 | शुक्र | 04/07/2027 | सूर्य | 17/07/2028 | मंगळ | 12/06/2030 | राहु | 16/12/2032 |
| शुक्र | 30/01/2026 | सूर्य | 01/08/2027 | चंद्र | 18/08/2028 | राहु | 07/10/2030 | गुरु | 19/04/2033 |

| गुरु - बुध | | गुरु - केतु | | गुरु - शुक्र | | गुरु - सूर्य | | गुरु - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/04/2033 | | 26/07/2035 | | 01/07/2036 | | 02/03/2039 | | 19/12/2039 | |
| 26/07/2035 | | 01/07/2036 | | 02/03/2039 | | 19/12/2039 | | 19/04/2041 | |
| बुध | 14/08/2033 | केतु | 15/08/2035 | शुक्र | 10/12/2036 | सूर्य | 16/03/2039 | चंद्र | 28/01/2040 |
| केतु | 01/10/2033 | शुक्र | 10/10/2035 | सूर्य | 28/01/2037 | चंद्र | 10/04/2039 | मंगळ | 26/02/2040 |
| शुक्र | 16/02/2034 | सूर्य | 27/10/2035 | चंद्र | 19/04/2037 | मंगळ | 27/04/2039 | राहु | 09/05/2040 |
| सूर्य | 30/03/2034 | चंद्र | 25/11/2035 | मंगळ | 15/06/2037 | राहु | 09/06/2039 | गुरु | 13/07/2040 |
| चंद्र | 07/06/2034 | मंगळ | 15/12/2035 | राहु | 08/11/2037 | गुरु | 18/07/2039 | शनि | 28/09/2040 |
| मंगळ | 25/07/2034 | राहु | 04/02/2036 | गुरु | 18/03/2038 | शनि | 03/09/2039 | बुध | 06/12/2040 |
| राहु | 26/11/2034 | गुरु | 20/03/2036 | शनि | 19/08/2038 | बुध | 14/10/2039 | केतु | 03/01/2041 |
| गुरु | 17/03/2035 | शनि | 13/05/2036 | बुध | 04/01/2039 | केतु | 31/10/2039 | शुक्र | 25/03/2041 |
| शनि | 26/07/2035 | बुध | 01/07/2036 | केतु | 02/03/2039 | शुक्र | 19/12/2039 | सूर्य | 19/04/2041 |

| गुरु - मंगळ | | गुरु - राहु | | शनि - शनि | | शनि - बुध | | शनि - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/04/2041 | | 26/03/2042 | | 18/08/2044 | | 22/08/2047 | | 01/05/2050 | |
| 26/03/2042 | | 18/08/2044 | | 22/08/2047 | | 01/05/2050 | | 10/06/2051 | |
| मंगळ | 09/05/2041 | राहु | 04/08/2042 | शनि | 08/02/2045 | बुध | 08/01/2048 | केतु | 25/05/2050 |
| राहु | 29/06/2041 | गुरु | 29/11/2042 | बुध | 14/07/2045 | केतु | 06/03/2048 | शुक्र | 31/07/2050 |
| गुरु | 13/08/2041 | शनि | 17/04/2043 | केतु | 16/09/2045 | शुक्र | 17/08/2048 | सूर्य | 21/08/2050 |
| शनि | 06/10/2041 | बुध | 19/08/2043 | शुक्र | 18/03/2046 | सूर्य | 05/10/2048 | चंद्र | 23/09/2050 |
| बुध | 24/11/2041 | केतु | 09/10/2043 | सूर्य | 12/05/2046 | चंद्र | 26/12/2048 | मंगळ | 17/10/2050 |
| केतु | 13/12/2041 | शुक्र | 03/03/2044 | चंद्र | 12/08/2046 | मंगळ | 21/02/2049 | राहु | 17/12/2050 |
| शुक्र | 08/02/2042 | सूर्य | 16/04/2044 | मंगळ | 15/10/2046 | राहु | 19/07/2049 | गुरु | 09/02/2051 |
| सूर्य | 25/02/2042 | चंद्र | 28/06/2044 | राहु | 29/03/2047 | गुरु | 27/11/2049 | शनि | 14/04/2051 |
| चंद्र | 26/03/2042 | मंगळ | 18/08/2044 | गुरु | 22/08/2047 | शनि | 01/05/2050 | बुध | 10/06/2051 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - शुक्र | | शनि - सूर्य | | शनि - चंद्र | | शनि - मंगळ | | शनि - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10/06/2051 | | 10/08/2054 | | 23/07/2055 | | 20/02/2057 | | 01/04/2058 | |
| 10/08/2054 | | 23/07/2055 | | 20/02/2057 | | 01/04/2058 | | 05/02/2061 | |
| शुक्र | 20/12/2051 | सूर्य | 27/08/2054 | चंद्र | 09/09/2055 | मंगळ | 16/03/2057 | राहु | 04/09/2058 |
| सूर्य | 16/02/2052 | चंद्र | 25/09/2054 | मंगळ | 13/10/2055 | राहु | 15/05/2057 | गुरु | 21/01/2059 |
| चंद्र | 22/05/2052 | मंगळ | 15/10/2054 | राहु | 07/01/2056 | गुरु | 08/07/2057 | शनि | 05/07/2059 |
| मंगळ | 29/07/2052 | राहु | 06/12/2054 | गुरु | 24/03/2056 | शनि | 10/09/2057 | बुध | 29/11/2059 |
| राहु | 18/01/2053 | गुरु | 22/01/2055 | शनि | 24/06/2056 | बुध | 07/11/2057 | केतु | 29/01/2060 |
| गुरु | 21/06/2053 | शनि | 17/03/2055 | बुध | 14/09/2056 | केतु | 30/11/2057 | शुक्र | 20/07/2060 |
| शनि | 21/12/2053 | बुध | 06/05/2055 | केतु | 18/10/2056 | शुक्र | 06/02/2058 | सूर्य | 10/09/2060 |
| बुध | 03/06/2054 | केतु | 26/05/2055 | शुक्र | 22/01/2057 | सूर्य | 26/02/2058 | चंद्र | 06/12/2060 |
| केतु | 10/08/2054 | शुक्र | 23/07/2055 | सूर्य | 20/02/2057 | चंद्र | 01/04/2058 | मंगळ | 05/02/2061 |

| शनि - गुरु | | बुध - बुध | | बुध - केतु | | बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 05/02/2061 | | 19/08/2063 | | 15/01/2066 | | 12/01/2067 | | 12/11/2069 | |
| 19/08/2063 | | 15/01/2066 | | 12/01/2067 | | 12/11/2069 | | 18/09/2070 | |
| गुरु | 08/06/2061 | बुध | 22/12/2063 | केतु | 05/02/2066 | शुक्र | 03/07/2067 | सूर्य | 27/11/2069 |
| शनि | 02/11/2061 | केतु | 11/02/2064 | शुक्र | 06/04/2066 | सूर्य | 24/08/2067 | चंद्र | 23/12/2069 |
| बुध | 13/03/2062 | शुक्र | 07/07/2064 | सूर्य | 24/04/2066 | चंद्र | 18/11/2067 | मंगळ | 10/01/2070 |
| केतु | 06/05/2062 | सूर्य | 20/08/2064 | चंद्र | 25/05/2066 | मंगळ | 18/01/2068 | राहु | 26/02/2070 |
| शुक्र | 07/10/2062 | चंद्र | 01/11/2064 | मंगळ | 15/06/2066 | राहु | 21/06/2068 | गुरु | 08/04/2070 |
| सूर्य | 22/11/2062 | मंगळ | 22/12/2064 | राहु | 08/08/2066 | गुरु | 06/11/2068 | शनि | 27/05/2070 |
| चंद्र | 07/02/2063 | राहु | 03/05/2065 | गुरु | 25/09/2066 | शनि | 19/04/2069 | बुध | 10/07/2070 |
| मंगळ | 02/04/2063 | गुरु | 28/08/2065 | शनि | 22/11/2066 | बुध | 12/09/2069 | केतु | 29/07/2070 |
| राहु | 19/08/2063 | शनि | 15/01/2066 | बुध | 12/01/2067 | केतु | 12/11/2069 | शुक्र | 18/09/2070 |

| बुध - चंद्र | | बुध - मंगळ | | बुध - राहु | | बुध - गुरु | | बुध - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18/09/2070 | | 18/02/2072 | | 14/02/2073 | | 03/09/2075 | | 09/12/2077 | |
| 18/02/2072 | | 14/02/2073 | | 03/09/2075 | | 09/12/2077 | | 18/08/2080 | |
| चंद्र | 31/10/2070 | मंगळ | 10/03/2072 | राहु | 04/07/2073 | गुरु | 23/12/2075 | शनि | 14/05/2078 |
| मंगळ | 01/12/2070 | राहु | 03/05/2072 | गुरु | 05/11/2073 | शनि | 02/05/2076 | बुध | 30/09/2078 |
| राहु | 16/02/2071 | गुरु | 20/06/2072 | शनि | 01/04/2074 | बुध | 27/08/2076 | केतु | 26/11/2078 |
| गुरु | 26/04/2071 | शनि | 17/08/2072 | बुध | 11/08/2074 | केतु | 14/10/2076 | शुक्र | 09/05/2079 |
| शनि | 17/07/2071 | बुध | 07/10/2072 | केतु | 05/10/2074 | शुक्र | 01/03/2077 | सूर्य | 27/06/2079 |
| बुध | 28/09/2071 | केतु | 28/10/2072 | शुक्र | 09/03/2075 | सूर्य | 12/04/2077 | चंद्र | 17/09/2079 |
| केतु | 29/10/2071 | शुक्र | 28/12/2072 | सूर्य | 24/04/2075 | चंद्र | 20/06/2077 | मंगळ | 14/11/2079 |
| शुक्र | 23/01/2072 | सूर्य | 15/01/2073 | चंद्र | 11/07/2075 | मंगळ | 07/08/2077 | राहु | 09/04/2080 |
| सूर्य | 18/02/2072 | चंद्र | 14/02/2073 | मंगळ | 03/09/2075 | राहु | 09/12/2077 | गुरु | 18/08/2080 |

# शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

| | |
|---|---|
| मूलांक | 4 |
| भाग्यांक | 6 |
| मित्र अंक | 1, 4, 6 |
| शत्रु अंक | 3, 7, 8 |
| शुभ वर्ष | 22,31,40,49,58 |
| शुभ दिवस | शनि, बुध, शुक्र |
| शुभ ग्रह | शनि, बुध, शुक्र |
| मित्र राशि | मीन, सिंह |
| मित्र लग्न | मकर, मिथुन, सिंह |
| अनुकूल देवता | हनुमान |
| शुभ रत्न | हीरा |
| शुभ उपरत्न | जरकिन, सुनहरा हकीक |
| भाग्य रत्न | पन्ना |
| शुभ धातु | रजत |
| शुभ रंग | रजत |
| शुभ दिशा | दक्षिणपूर्व |
| शुभ समय | सकाली |
| दान पदार्थ | मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न | तांदुल |
| दान द्रव्य | दूध |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| पन्ना | बुध | 88% | सन्तति सुख, भाग्योदय, कम खर्च |
| नीलम | शनि | 86% | पराक्रम, सुख, सन्तति सुख |
| लहसुनिया | केतु | 70% | धनार्जन, सन्तति सुख |
| मोती | चंद्र | 66% | पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति |
| हीरा | शुक्र | 66% | दम्पति, दुर्घटणा पासून सुरक्षा, स्वास्थ्य |
| गोमेद | राहु | 66% | सन्तति सुख, पराक्रम |
| माणिक्य | सूर्य | 56% | सन्तति सुख, धनार्जन |
| पोवले | मंगळ | 38% | पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि |
| पुष्कराज | गुरु | 25% | दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग |

रत्न की शुभता

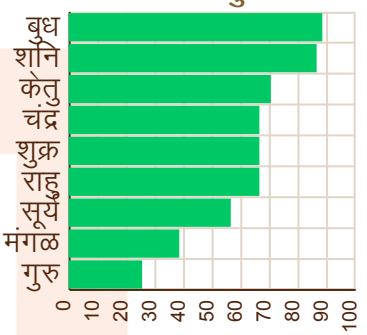


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | पोवले | पन्ना | पुष्कराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 19/08/1993 | 69% | 72% | 50% | 88% | 38% | 53% | 73% | 53% | 58% |
| चंद्र | 19/08/2003 | 62% | 78% | 38% | 94% | 25% | 66% | 86% | 53% | 58% |
| मंगळ | 19/08/2010 | 62% | 72% | 56% | 75% | 38% | 66% | 86% | 53% | 77% |
| राहु | 18/08/2028 | 38% | 53% | 12% | 88% | 25% | 72% | 92% | 78% | 58% |
| गुरु | 18/08/2044 | 62% | 72% | 50% | 75% | 50% | 53% | 86% | 66% | 70% |
| शनि | 19/08/2063 | 38% | 53% | 12% | 94% | 25% | 72% | 98% | 72% | 58% |
| बुध | 18/08/2080 | 62% | 53% | 38% | 100% | 25% | 72% | 86% | 66% | 70% |
| केतु | 19/08/2087 | 38% | 53% | 50% | 88% | 25% | 72% | 73% | 53% | 83% |
| शुक्र | 20/08/2107 | 38% | 53% | 38% | 94% | 25% | 78% | 92% | 72% | 77% |

# विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

## आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, मोती, हीरा, गोमेद एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

## पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से

वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

## नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

## लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

## मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण कर आप पराक्रम से धन प्राप्त करने में सफल हो सकते है। मोती रत्न आपको धार्मिक, यशस्वी, प्रसन्न, आस्तिक एवं मधुरभाषी बनायेगा। मोती रत्न बन्धु बान्धवों से रिश्ते मजबूत होंगे। रत्न प्रभाव आपके चरित्र को उत्तम रखेगा और आप सत्य का साथ देंगे। मोती रत्न से आपके वितीय विषय आपके पक्ष में रहेंगे। छोटी यात्राएं आपके लिए सुखद रहेंगी। चंद्र रत्न आपकी धर्य शक्ति का विकास कर रहा है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

## हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

## गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान

करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

## माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

## मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने

सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर रेल यात्राओं के दौरान आपका कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा हो सकता है। यह रत्न आपको असंतोष एवं तनाव दे सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपके पिता का स्वभाव क्रोधी एवं रुखा हो सकता है। आपको धनहानि और अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता को मुकद्दमेबाजी और शत्रुओं से हानि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में कुछ कमी कर सकता है। मूंगा रत्न आपको कानों या बाजुओं से संबंधित तकलीफें दे सकता है। अत्यधिक क्रोध के चलते आपके अपने मित्रों से संबंध खराब हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

## पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको सरकारी कामों, कचहरी के कामों, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला इत्यादि के कामों में कार्य करने पर परेशानियां दे सकता है. यह रत्न आपको विपरीत लिंग से विमुख कर सकता है। ग्रहस्थ जीवन विषयों में आपकी रुचि कम हो सकती है। आप अपने जीवनसाथी के प्रति अनिष्ठावान हो सकते है। परन्तु फिर भी दांपत्य जीवन को अनुकूल समय न दे पाने के कारण आपके वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। पुखराज रत्न आपको धार्मिक क्रियाकलापों में अधिक संलग्न रख सकता है। व्यवसायिक क्षेत्रों में आप अपनी पूरी योग्यता से कार्य नहीं कर पाएगें।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

## दशानुसार रत्न विचार

## राहु
## (19/08/2010 - 18/08/2028)

राहु की दशा में आपका नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## गुरु
## (18/08/2028 - 18/08/2044)

गुरु की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया, गोमेद, माणिक्य, हीरा, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

## शनि
## (18/08/2044 - 19/08/2063)

शनि की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## बुध
## (19/08/2063 - 18/08/2080)

बुध की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया, गोमेद, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## केतु
## (18/08/2080 - 19/08/2087)

केतु की दशा में आपका पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, मोती, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## शुक्र
## (19/08/2087 - 20/08/2107)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

# शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

# रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

## आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए

आवश्यक हैं।

# साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 13/03/1988-21/03/1990 | 20/06/1990-15/12/1990 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 21/03/1990-20/06/1990 | 15/12/1990-05/03/1993 | 15/10/1993-10/11/1993 |
| चतुर्थस्थान चरण | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 | ---------- |
| अष्टमस्थान चरण | 06/09/2004-13/01/2005 | 26/05/2005-01/11/2006 | 10/01/2007-16/07/2007 |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |
| चतुर्थस्थान चरण | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| अष्टमस्थान चरण | 13/07/2034-27/08/2036 | ---------- | ---------- |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |
| चतुर्थस्थान चरण | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| अष्टमस्थान चरण | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 | 03/02/2066-03/07/2066 |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 05/02/2073-31/03/2073 | 23/10/2073-16/01/2076 | 11/07/2076-11/10/2076 |

### शनि चा ढैया फल

| ढैया चा प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | शुभ | पराक्रम |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | शुभ | सुख |
| चतुर्थस्थान चरण | शुभ | शत्रु व रोग |
| अष्टमस्थान चरण | सम | व्यावसायिक परेशानी |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | अशुभ | धन |

# साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

# मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

**********

तुमची जन्म कुंडळीत मंगळ चंद्रमा बरोबर आहे यद्यपि चंद्र पासून मंगळ दोष जास्ती नाय होतात, तसेच यांचे प्रभाव पासून तुमचा शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहणार पण मनाची त्रास होउ सकतात, कधीं–मधीं असा अनुभव होणार. स्वभावात तीव्रता रहणारी हा मंगळ तुमचे विवाह मधे अनावश्यक उसीर करणार तसेच गेलेला दिवसांचे वार्ता पण खोटे करू सकतो या मुळे शारीरिक आणि मानसिक त्रास होउ सकतात. चन्द्र बरोबर मंगल ची युति होण्या मुळे तुमचा शारीरिक आणि मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहणार लग्न पासून चतुर्थ दृष्टि मुळे तुमचे जीवनात भौतिक सुख संसाधना चा प्राप्ती परिश्रम पासून होणार. ह्या साठी तुम्हाला फार परिश्रम होउ सकतात. सप्तम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून नवरा चा स्वास्थ्य सामान्य रहणार तसेच  लवकर गुस्से ची नेहमी स्थिति होणारी ज्या मुळे कधीं–मधीं सम्बन्धातील त्रास येणार. अष्टम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे सांसारिक महत्वपूर्ण कार्याला काही विघ्न आणि अडचणे येणार तसेच कार्य सिद्धि साठी वेळ लागणार पण स्वतः चे परिश्रम आणि पराक्रम पासून सर्व कार्याला अड़चनांची खात्मा–सामना, आणि सामाधान कराय साठी समर्थ होणारी. अतः मंगळ चा अशुभ प्रभाव कम कराय साठी आणि स्वतः चा जीवन सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला काही उचित मांगळिक युवक बरोबर विवाह करायला पाहिजे ज्या मुळे तुमचा मंगळ दोष भंग होउ सकतात. हा दोष भंग होण्या वर तुमचा शारीरिक आणि मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहणार तसेच जीवना चे आवश्यक सुख साधन अर्जित होणार. आणि उपभोग होणार. आपण चल आणि अचल संपत्ति चे मालक होणारी राजनैतिक लाभ सुखी रहणार जीवनात धन यैश्वर्य सौभाग्य आणि शुभ प्रभाव पासून सुखी दांपत्य जीवन व्यतीत करणारी. कुंडली मिलान समयी ज्या युवक ची कुंडलीत मंगळ चंद्रमा बरोबर असेल तर असा विवाह शुभ नाय होणार समान भावात मंगळ शारीरिक आणि मानसिक स्वभाव प्रभावित करतात इतर भावात मंगळ दोष भंग करतात तसेच दांपत्य जीवन सुखी होणार. ह्या प्रकारी सावध होउन आणि लक्षात ठेउन कुंडली मिलान करून निर्णय होणार पाहिजे.

# कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि, बुध और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा

किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

## चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

## मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

## बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

## गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

## शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

## राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

# शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म तूळ लग्नामध्ये झाला आहे, त्यामुळे आपले शरीर निरोगी, सुडौल व आकर्षक असेल. स्वभावाने नरम असाल आणि बोलताना प्रयत्नपूर्वक गोड शब्दांचा वापर कराल. हास्यप्रिय व्यक्ती असून मुलांचे तीव्र आकर्षण असेल. सुंदर वस्तू, सुंदर घ्श्ये पाहून आपल्याला हार्दिक प्रसन्न वाटते. कधी कधी एकदम संतापला तरीही लगेच शांतसुद्धा होता. आपल्या व्यक्तिमत्वाचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे कधीही कोणाला दुःख देत नाही, अगदी प्रबळ शत्रूशी सुद्धा आपला व्यवहार नरम व कोमल असेल. या गुणामुळे समाजामध्ये लोकप्रिय असाल आणि सर्व लोक आपल्याला यथोचित सन्मान देतील. विद्वान व्यक्ती असाल आणि सत्कर्मांमधून उदरनिर्वाह करण्याचा प्रयत्न कराल. कलाकुशलतेमध्ये विशेष रस असेल आणि कलात्मकतेशी भावनात्मक संबंध असेल. नीतीने काम करण्याकडे कल राहील.

आपली सर्व शुभ व महत्वाची कामे नीतीनुसारच संपन्न करण्याचा प्रयत्न कराल. नवनवीन गोष्टी समजून घेण्यामध्ये रूची असेल आणि एखादा नवीन सिद्धांतसुद्धा प्रतिपादित करू शकता. मानसिक शक्ती प्रबळ असेल आणि आपली कामे तत्परतेने कराल, पण एखाद्या विशिष्ट सिद्धांताला चिकटून राहणार नाही तर त्यामध्ये काळानुरूप बदल करत राहाल. भावंडे तसेच नातेवाईकांना पूर्ण सुख व सहयोग द्याल, पण त्यांच्याकडून आपण विशेष सुख, मदत अपेक्षित करू नये.

राजकारणात विशिष्ट यश मिळवू शकता, कारण नेतृत्व गुण आपल्यात आहेत आणि आपल्या अनुयायांना आपल्या नैतिकतेच्या दिशेने नेण्यास समर्थ असाल. दर्शनशास्त्र तसेच अध्यात्मात रूची राहील. बुद्धिमत्ता तीव्र असल्याने कोणत्याही गोष्टीच्या अंतपर्यंत जाण्यास समर्थ असाल. शत्रूला आपल्या बुद्धिच्या जोरावर पराजित करण्यास समर्थ असाल. साधू–संतांवर विशेष श्रद्धा असाल आणि व्यापार किंवा न्यायसंबंधी कामात लाभ प्राप्त होईल. घष्टिकोन विशाल असल्याने समाज यथायोग्य सन्मान देईल. भेदभाव दूर करून सर्वांशी समान वर्तणूक कराल. आपल्या व्यक्तिमत्वात भावुकता व संवेदनशीलता स्पष्ट दिसते. आपल्या कुटुंब किंवा कुळामध्ये श्रेष्ठ असाल आणि स्थिर धनवैभव व ऐश्वर्याने संपन्न असाल.

अशाप्रकारे शांतीप्रिय, नेता, संत, सर्वप्रिय न्यायी व संवेदनशीलतेने युक्त राहून काळ घालवाल. यथोक्तम–

गुशाधिकत्वाद द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मअयतिनैपुणत्वम।
पद्मालया तन्निलये न लालालग्न तुला चेत्स कुलावतंस।।

– जातकाभरणम

म्हणजे तूळ लग्नामध्ये जन्म झालेला जातक व्यापार कुशल, धनवान, स्थिरलक्ष्मीयुक्त व कुळामध्ये श्रेष्ठ असतो.

# धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये मंगळाची राशी वृश्चिक उदित होती. याच्या प्रभावामुळे स्वकर्तृत्व व कष्टाने धनार्जन करण्यात समर्थ असाल. पैतृक संपत्ती कमी मिळेल, पण बहुमूल्य रत्न व धातू स्वकर्तृत्वाने प्राप्त कराल. मालमत्ता किंवा भूमिसंबंधी क्रय विक्रयामध्ये रस असून त्यातून भरपूर लाभ होईल. त्याचबरोबर कृषि किंवा बागकामाची आवड राहील. एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असून कुटुंबाच्या मदतीने आयुष्यात अपेक्षित प्रगती व सन्मान प्राप्त कराल. पण संकटकाळी स्वतःला सांभाळण्यास कमी पडाल.

कुटुंबाला आनंदी व सुविधा पुरवण्यासाठी आपण सतत प्रयत्नरत राहाल आणि कौटुंबिक शांती व सुखसुविधांवर पुष्कळ खर्च कराल. वाणी प्रभावी असेल आणि इतरांना तर्कपूर्ण बोलण्यातून प्रभावीत कराल. मिष्ठान्न आवडते आणि प्रौढावस्थेत डोळ्यांचे विकार होऊ शकतात. धार्मिक परंपरांचे पालन कराल. सज्जनाच्या प्रति मनामध्ये नेहमी आदर असेल.

# आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुमची आई आधुनिक विचारांची असेल आणि कुटुंबाला वाहून घेतलेली असेल. कुटुंब सदस्यांची खूप सेवा करेल तसेच स्वादिष्ट भोजन करून तुम्हा सर्वांना खाऊ घालण्यात तिला आनंद वाटत असेल. काटकसरी असेल आणि कुटुंबाचा खर्च कमीत कमी करण्याचा प्रयत्न असेल. खूप कष्टाळू असेल, वृद्धावस्थेत शारीरिक कष्ट होण्याचा संभव आहे. तुमच्या वडिलांसाठी आदर्श जोडीदार असेल आणि त्यांच्या प्रत्येक कामात आपला सहभाग दर्शवेल.

आपल्यापाशी सुंदर, आकर्षक व आरामदायक घर असेल आणि त्यामध्ये आधुनिक सुख सुविधांची सर्व उपकरणे असतील. वडिलांकडून वाहनसुख प्राप्तीसुद्धा होईल. पैतृक संपत्ती मिळेल, पण त्यातून वाद होतील, त्यामुळे ती संपत्तीपासून दूर जाण्याचा प्रयत्न कराल.

शैक्षणिक क्षेत्रात आपल्याला यश मिळेल. उच्च तसेच स्पर्धात्मक परिक्षांमध्ये अपेक्षित यश मिळेल. सरकार किंवा सरकारी उद्योगांमध्ये व्यवस्थापक किंवा प्रशासक म्हणून काम कराल. गुप्त धन किंवा विद्यासुद्धा प्राप्त होतील आणि ज्योतिष, तंत्र, मंत्राचे ज्ञान असेल. गणित, साहित्य किंवा मानसशास्त्राचे सुद्धा आपण ज्ञान ग्रहण कराल. पाण्यासंबंधी कार्यातून सुख तसेच मित्रांपासून लाभ होईल.

# बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि शिक्षणाला नेहमी प्राधान्य द्याल. जीवनसाथी म्हणून आपण बुद्धिमान व शिक्षित पतीला पसंत कराल. प्रेमभावना मनामध्येच ठेवून त्याचे प्रदर्शन कमीच कराल. त्यामुळे काहीवेळा तुम्ही अडचणीत सापडाल. पती व कुटुंबाला पूर्ण सहकार्य कराल आणि त्यांना सुखसुविधा देण्यासाठी कायम प्रयत्नरत राहाल. साहजिकच कुटुंबकर्तव्यांचे पूर्ण पालन कराल.

संतती लाभेल आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहकार्य आयुष्यभर लाभेल. तुमच्याकडे त्यांची ओढ असेल. आपल्याला यथोचित मान व आदर देतील आणि आपली सेवा करणे आपले कर्तव्य समजतील. तुम्हीसुद्धा त्यांचे शिक्षणाची पूर्ण व्यवस्था कराल आणि त्यांच्यात साहस, निर्भयता, पराक्रम व आत्मविश्वास जागृत ठेवाल. उत्साहवर्धक विचार त्यांच्यामध्ये पेराल. या सर्व गुणांमुळे संतान सर्वत्र यश प्राप्त करेल. वैदिक साहित्य तसेच ज्ञानार्जनामध्ये ओढ असेल आणि परिश्रमपूर्वक ज्योतिषसंबंधी ज्ञान प्राप्त करेल. जुन्या रीतीरिवाजांचे पालन कराल, पूर्वजन्मावर विश्वास असेल. याव्यतिरिक्त धैर्यवान, गंभीर प्रकृति, सत्यवक्ता, प्रसिद्ध, स्वकल्याणासाठी कष्ट सहन करणारे आणि पुण्यवान असाल.

# दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले पती आकर्षक तसेच सुशील स्वभावाचे असतील. जरी कधी कधी उग्र रूप धारण केले तरी तात्काळ शांतसुद्धा होतील. त्यामुळे दाम्पत्य जीवनावर विशेष प्रभाव पडणार नाही. पण ती आधुनिक विचारांची व्यक्ती असू शकते, आणि आपल्या मुत्सद्दी व सरळ स्वभावाने कुटुंबामध्ये परस्पर सामंजस्य स्थापन करेल.

आपल्याला सामाजिक कामे आवडतात. त्याचबरोबर कौटुंबिक वातावरण सुख व शांत असेल. आपल्याला उंची राहणीमान आवडत असल्याने ते प्राप्त करण्यासाठी कायम प्रयत्नशील राहाल. तुम्ही नेहमी प्रसन्न, शृंगारप्रिय व परस्पर सामंजस्य ठेवण्याचा प्रयत्न करत असल्याने पती व कुटुंबातील इतर सदस्यांना सुख, आराम व इतर गरजा पूर्ण करण्यास तत्पर असाल. बुद्धिमान व चतुर व्यक्ती असल्याने तर्कापेक्षा शांतपणे कोणत्याही विषयी निर्णय घ्याल. आपल्याला चांगले कपडे, खाणे, हॉटेल तसेच क्लबमध्ये जाणे आवडते तसेच विसरा आणि क्षमा करा या सिद्धांतानुसार वागता. तुम्च्यासाठी कन्या, कुंभ लग्नाचे जातक विवाह, मैत्री, भागीदारीसाठी अनुकूल असतील. कर्क व मकर राशीच्या व्यक्तींशी संबंध ठेवताना काळजी घ्यावी. आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रात यश मिळवाल. द्रव्यासंबंधी, केमिस्ट, इंजीनिअरिंग, ट्रान्सपोर्ट, पेंटिंग किंवा कलेच्या क्षेत्रात तुम्ही किंवा तुमचे पती यश प्राप्त करू शकतील. याव्यतिरिक्त आपला पती सुस्वभावी व धनार्जन करण्यास तत्पर असेल आणि आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग देईल.

# पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य उत्तम राहील व मानसिकघ्ष्ट्या ते शांत स्वभावाचे असतील. ते परिवर्तन व प्रवासप्रेमी असतील. सामाजिक कार्यामध्येसुद्धा त्यांना रूची असेल. ते भावूक व सहानुभूतीयुक्त असतील तसेच स्मरणशक्ती उत्तम असेल.

सरकार व सरकारी कर्मचाऱ्यांकडून आपल्याला अपेक्षित सहकार्य प्राप्त होईल, त्याचबरोबर वित्त व सामाजिक क्षेत्रात कार्यरत राहिल्यास यश प्राप्त कराल. कायदा किंवा वकिलीसंबंधी व्यवसाय आपल्यासाठी उत्तम असेल. त्याचबरोबर पाण्यासंबंधी व्यवसायातूनही लाभ होतील. तसेच रासायनिक क्षेत्र, लेखक, संगीतज्ञ, गायक, वास्तुकला व विक्रेत्याच्या रूपाने आपले कार्य प्रारंभ होईल व त्यात अपेक्षित प्रगती व यश प्राप्त कराल. त्यामुळे उत्तम भवितव्यासाठी आपण यापैकीच एखाद्या व्यवसायाची निवड करावी. मध्यमायुमध्ये आपल्याला अपेक्षित प्रगती, यश व कीर्ती प्राप्त कराल. राजकारणात रूची राहील किंवा राजकीय नेत्यांशी तसेच सरकारी उच्चाधिकाऱ्यांशी चांगले संबंध असतील व वेळोवेळी आपल्याला अपेक्षित लाभ व सहकार्य मिळेल. कोर्टकचेरीत यश मिळेल. याव्यतिरिक्त आपण पुण्यवान, धार्मिक, दयाळू, विनम्र व शांत वृत्तीची व्यक्ती असाल.

# फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 07/03/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। शुक्र सप्तं भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण रवि पंचम भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे  चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय

सदुपयोग करावे.

हा वर्ष तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, शुभ कार्य आणि विशेष प्रयोजने उत्साह आणि पराक्रम पासून पूर्ण करणारी. अधूरे जुने कार्य पूर्ण होणार कार्य क्षेत्र विस्तृत कराय ची इच्छा होणारी मित्र आणि सहयोगी कार्य क्षेत्र मधे मदद करणारे. प्रवास पासून नवीन कार्य सफळ होणार कुटुम्ब स्थिति चांगली रहणारी पण कधीं–मधीं संतति पासून चिंता होणारी शत्रु अडचणे उत्पन्न करणारे पण विजय प्राप्त होणारी.

# फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

राहु ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 30/01/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि पंचम भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र तृतीय भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, विशेष कार्य मधे एका एकी सफळता प्राप्त होणार. कार्य प्रयोजने ची सफळता प्राप्त होणारी कुटुम्ब शान्त आणि सुखी तसेच परस्पर मधुर सम्वन्ध आणि सहयोग रहणार स्वास्थ्य पण उत्तम रहणार आपण सगड़े उन्नती कराय साठी सफळ रहणारी प्रवास पासूल लाभ प्राप्त होणार. नंतर विशेष माणूस आणि अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि भविष्य मधे लाभ प्राप्त होणार अतः समय चा सदुपयोग करायला पाहिजे असा क न सफळता प्राप्त होणारी.

हा समय तुमचा साठी विशेष महत्वपूर्ण आहे अतः साहस आणि आत्म विश्वास पासून शुभ कार्य सम्पन्न करणारी काही प्रवास पण होणारी तसेच प्रवास मधे लाभ होणार. कोणी प्रभाव शाळी माणूस बरोबर संबन्ध स्थापित होणार आणि लाभ होणार आर्थिक स्थिति उत्तम रहणारी तसेच धनार्जन साठी सफळ रहणारी समाजातीळ सम्मान प्राप्त होणार आणि कुटुम्ब शान्ती आणि मधुर संवन्ध रहणार कोणी प्रयोजने पण सफळ होणारी साहित्य कळा आणि कविता मधे  चि होणारी तसेच फायदे पण मित्र पासून लाभ आणि सहयोग प्राप्त होणार.

# फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

ह्या वर्ष गुरु ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ राहु ची महादशा मधीं चन्द्र चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति गुरु ची महादशा मधीं गुरु चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी सप्तं भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महतवपूर्ण रहणार तसेच शुभ अवसर प्राप्त होणारे. जुने आकांक्षा पण पूर्ण होणारे चन्द्र अंर्तदशा मधे लाभ देणारी प्रवास होणारी तसेच भविष्य साठी उन्नति मार्ग प्रदान करणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार. कोणी मांगळिक कार्य पण सम्पन्न होणार शत्रु वर विजय प्राप्त करणारी

तसेच शत्रु पासून काही त्रास नाय होणार अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आपण सगड़े सफळता प्राप्त करणारी आणि कार्य मधे  चि उत्पन्न होणारी. विशेष माणूष बरोवर सम्पर्क स्थापित होणार आणि मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती तसेच परस्पर सहयोग रहणार आणि मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. आर्थिक स्थिति शुभ रहणारी तसेच धन आणि सम्मान अर्जित करणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. कोणी प्रवास पासून लाभ होणार सामाजिक प्रतिष्ठा, यश, प्राप्त होणार मित्र पूर्ण सहयोग देणारे अतः समय सदुपयोग करावे.

# फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू ळग्नी व केतु सप्तमात असेळ, त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामान्य असेळ. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य मध्यम स्वरूपाचे असेळ. कौटुंबिक जीवन सुखाचे राहीळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ परंतु पत्नीची प्रकृती बिघडू शकते. आर्थिक सिती ह्या काळात सामान्य असेळ. कार्यक्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचेबरोबर प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होतीळ व नवीन संबंध वाढतीळ. ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ आहे. त्यामुळे सांसारिक कार्यात यश मिळून उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्त्रोत वाढतीळ. त्यामुळे हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी सप्तं भावात मेष राशि मधीं स्थित आहे।

# फलादेश - 2029

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकति किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू ळग्नी व केतु सप्तमात असेळ, त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामान्य असेळ. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य मध्यम स्वरूपाचे असेळ. कौटुंबिक जीवन सुखाचे राहीळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ परंतु पत्नीची प्रकृती बिधडू शकते. आर्थिक सिति ह्या काळात सामान्य असेळ. कार्यक्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचेबरोबर प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होतीळ व नवीन संबंध वाढतीळ. ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ आहे. त्यामुळे सांसारिक कार्यात यश मिळून उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्त्रोत वाढतीळ. त्यामुळे हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी सप्तं भावात मेष राशि मधीं स्थित आहे।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- राहु
## ( 19/08/2010 - 18/08/2028 )

राहु की महादशा 19/08/2010 को आरम्भ और 18/08/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर-रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सट्टे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य-स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काय्र अथवा व्यावार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद के लेन-देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख ओर सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।

## अंर्तदशा :– राहु – शुक्र
## ( 07/03/2022 - 07/03/2025 )

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 19/08/2010 को प्रारंभ होकर 18/08/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 07/03/2022 को प्रारंभ होकर 07/03/2025 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव, लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक हो सकता है मगर आपकी दिलचस्पी मौज-मस्ती और सुरापान में हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विवाहेतर संबंध हो सकते हैं, जिस कारण कोई गुप्त रोग पनप सकता है। विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ साझेदारी वाले व्यापार में लाभ हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

## अंर्तदशा :– राहु – सूर्य
## ( 07/03/2025 - 30/01/2026 )

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 19/08/2010 को प्रारंभ होकर 18/08/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 07/03/2025 को प्रारंभ होकर 30/01/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर जाकर रह सकते हैं। जंगल आदि में निवास हो सकता है। अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग हो सकता है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।

## महादशा :– गुरु
## ( 18/08/2028 - 18/08/2044 )

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 18/08/2028 को आरम्भ तथा 18/08/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावत एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्त्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु का आपके व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप संत की तरह धार्मिक होंगे तथा शिक्षित व्यक्ति की तरह ज्ञान की खोज में अपनी पसंन्द के कारण अध्ययन से जुड़े

रहेंगे।

## अंर्तदशा :– गुरु – गुरु
## ( 18/08/2028 - 07/10/2030 )

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 18/08/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/08/2028 को प्रांरभ होकर 07/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नये मित्र बनेंगे। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। कई माध्यमों से धनलाभ होगा। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और प्रकाशन के लिए शुभ समय है। ललित कलाओं और नाटक आदि में रुचि हो सकती है। संचार माध्यमों से लाभ हो सकता है। पारंपरिक साहित्य और कला की ओर अधिक झुकाव होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता की विद्वानों और सत्पुरुषों से मित्रता होगी। उन्हें समाज में सफलता मिलेगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उन्हें भूमि और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम शिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाषण प्रतियोगिता आदि में भाग ले सकते हैं। अध्ययन, लेखन और ज्ञान-विज्ञान में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, अनाज और हल्दी दान करें।